Bed 1st year
Paper - C2
Unit - 3

रूसो (Rousseau)

रूसो का जीवन परिचय :- रूसो का पूरा नाम जीन जैक रूसो है। रूसो एक प्रसिद्ध प्रकृतिवादी शिक्षा दार्शनिक थे। रूसो का जन्म 28 जून, 1712 ई० को स्विटजरलैंड के जेनेवा नामक नगर में एक सम्मानित परिवार में हुआ था। उसके पिता एक फ्रांसिसी घड़ीसाज थे। जन्म के तुरन्त बाद रूसो की माता का देहान्त हो गया। उनकी देखभाल उनकी चाची ने की। बारह वर्ष की अवस्था में रूसो घर से भागकर छोटी-मोटी नौकरी करने लगा। बाद में थेरेस लीवेस्योर नामक महिला से विवाह कर वह पेरिस आ बसे।

रूसो को सर्वप्रथम यश प्रसिद्धि प्राप्त हुई जब उसने डिजन एकेडमी की निबन्ध प्रतियोगिता में 1750 ई० में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। तीन वर्षों बाद पुनः इसी एकेडमी में "मानवों में असमानता के कारण तथा यह प्रकृति नियम द्वारा स्वीकृत है या नहीं" पर दूसरा निबंध सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्ध हो गया। इस उपन्यास से वह एक महान प्रकृतिवादी दार्शनिक के रूप में स्थापित हो गया। रूसो को न केवल एक दार्शनिक के रूप में ही वरन् महान क्रांतिकारी के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

फ्रांस की क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारण रूसो के क्रांतिकारी विचार थे।

रूसो की प्रमुख रचनाएं :-

1) दि प्रोग्रेस ऑफ साइन्सेज एण्ड आर्ट्स
2) दि एमिल
3) दि सोशल कॉन्ट्रेक्ट
4) दि न्यू हेलवायज, इत्यादी

शिक्षा की दृष्टि से रूसो की सर्वप्रसिद्ध रचना एमिल है जिसमें उन्होंने एमिल नाम के एक काल्पनिक बालक को शिक्षा देने की प्रक्रिया का वर्णन किया है।

रूसो का शिक्षा दर्शन :-

शिक्षा पर उनके विचार उनके प्रसिद्ध प्रकाशन जैसे "दि प्रोग्रेस ऑफ साइन्सेज एण्ड आर्ट्स", "दि एमिल", "न्यू हेलवायज" में लिखे गए है। रूसो का प्रकृतिवादी दर्शन तीन स्वरूपों को दर्शाता है: सामाजिक प्रकृतिवाद, मनोवैज्ञानिक प्रकृतिवाद, तथा नैतिक प्रकृतिवाद। उनके अनुसार प्रत्येक वस्तु प्रकृति के सृजन से आने पर अच्छी हो जाती है।" रूसो के अनुसार केवल प्रकृति ही शुद्ध, स्वच्छ, श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली है। मानव समाज पूर्ण रूप से भ्रष्ट है इसलिए व्यक्ति को समाज के बन्धनों से मुक्त रहना चाहिए।

एवं "प्रकृति की अवस्था" में रहना चाहिए।

रूसो के अनुसार शिक्षा में तीन महत्वपूर्ण पक्ष है

1. बच्चे की अन्तर्निहित शक्ति
2. सामाजिक वातावरण तथा
3. भौतिक वातावरण

रूसो का शिक्षा दर्शन इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बच्चे को इस तरह से तैयार किया जाय कि वे अपनी स्वतंत्रता का भविष्य में सही उपयोग कर सके।

रूसो के अनुसार बालक बालक की शिक्षा के तीन प्रमुख स्रोत है।

शिक्षा के स्रोत

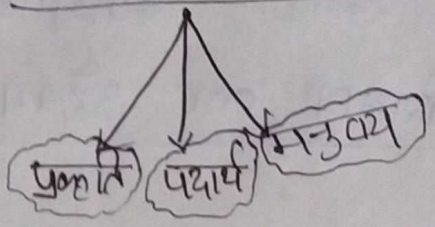

रूसो के अनुसार बालक का विकास प्रकृति तथा पदार्थ के माध्यम से होता है। प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों की शिक्षा में रूसो अध्यापक की कोई भूमिका नहीं देखता है माता-पिता ही इस अवस्था में बच्चों के सहज-शिक्षक होते है

शिक्षा के उद्देश्य (object of Education)

रूसो ने शिक्षा के उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम को बालक के विकास की अवस्थाओं के अनुसार निर्धारित किया। जो निम्नलिखित है।

1) शारीरिक विकास का उद्देश्य (Aims of physical development) →

जन्म से लेकर पाँच वर्ष तक की उम्र में

रूसो ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का शारीरिक विकास बताया है। इसका तात्पर्य बालक के अंग - प्रत्यंग के विकास से है। जिससे वह स्वस्थ तथा शक्तिशाली बने। शारीरिक स्वास्थ्य ही बालक के मानसिक स्वास्थ्य का आधार होता है।

रूसो के अनुसार :- "समस्त श्रेष्ठता निर्बलता से आती है। बालक को सबल बनाया जाना चाहिए जिससे कि वह ऐसा कुछ नहीं करेगा जो बुरा हो।"

बालक की मूल प्रवृत्तियों के विकास के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि उसे स्वतंत्रता देने की आवश्यकता है जिससे की उसका स्वाभाविक विकास हो सके।

2.) इन्द्रिय प्रशिक्षण का उद्देश्य :-

5 से 12 वर्ष की उम्र के बच्चों में रूसो ने शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानेन्द्रियों का विकास करना बताया जिससे कि बालक अपनी ज्ञानेन्द्रियों का उचित प्रयोग कर सके रूसो ने लिखा है कि - "शरीर को व्यायाम कराओ, अंगों और ज्ञानेन्द्रियों की प्रशिक्षण के लिए बालकों को नाना प्रकार की वस्तुओं को देखने के अवसर देने चाहिए।"

3.) उपयोगी तथा व्यावहारिक ज्ञान का उद्देश्य :-

किशोरावस्था 12 से 14 वर्ष तक की आयु में रूसो बालक को नियमित शिक्षा आरम्भ करने के पक्ष में है। इस समय बालक को उन बातों की शिक्षा दी जाए जो उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो।

4) भावात्मक विकास का उद्देश्य - (Aims of Emotional Development) —

युवावस्था 15 से 20 वर्ष तक की आयु में रूसो ने बालक के भावात्मक विकास पर बल दिया है। भावात्मक विकास के लिए बालक में सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक भावनाओं को जाग्रत करना चाहिए।

रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालकों की अपनी प्रकृति अर्थात अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तियों, इच्छाओं और रुचि के अनुसार कार्य करते हुए वर्तमान सुख की प्राप्ति के लिए अवसर प्रदान करना है।

पाठ्यक्रम (curriculum)

रूसो प्रथम बारह वर्षों तक औपचारिक शिक्षा देने का विरोधी है। साथ ही पाठ्यक्रम में कुछ विषयों एवं उनके परम्परागत शिक्षण-विधियों का भी विरोध करता है। रूसो जिन विषयों की शिक्षा देने की संस्तुति करते है वे है - शारीरिक शिक्षा, इन्द्रियों का प्रशिक्षण, शिल्प की शिक्षा, औद्योगिक एवं यांत्रिक कला, इतिहास ये सभी बालक की अवस्थाओं में बाँटकर बताया गया है इसी के आधार पर पाठ्यक्रम की स्तुति करते है।

शिक्षण विधि

रूसो अपने प्रकृतिवादी सिद्धान्तों को शिक्षण-विधि का आधार बनाते है। बच्चों को पढ़ाये जाने की क्रिया को वह बचपन का अभिशाप मानते है। अगर बच्चे में जानने या सीखने की

इच्छा जाग्रत हो जायेगी तो वह स्वयं सीख लेगा। सभी सीखने की पहली शर्त है। उन्होंने दो शिक्षण विधियों को महत्व दिया है।

शिक्षण विधि

① अनुभव के द्वारा सीखना

② करके सीखना

① अनुभव के द्वारा सीखना → रूसो पुस्तकों के विरोधी थे क्योंकि उनकी दृष्टि में पुस्तक वैसी चीज के बारे में बोलना सिखाता है जो हम तक नहीं है। प्रथम बारह वर्षों तक बच्चों को किताबों से अलग रहना चाहिए। यह रूसो का मानना था।

② करके सीखना → रूसो रट कर सीखने का विरोधी था। वह बच्चों में तर्क, विश्लेषण एवं संश्लेषण की शक्ति को विकसित करना चाहता था। रूसो परम्परागत शिक्षण-विधि का प्रबल विरोधी था।

अनुशासन

रूसो के अनुसार बच्चे को पूर्ण स्वतंत्रता देनी चाहिए। यह अनुशासन के लिए पहला कदम है। बच्चा अगर प्राकृतिक वातावरण में स्वतंत्र रहेगा

तो उसकी अन्तर्निहित शक्तियों का बेहतर विकास होगा। रूसो दण्ड देने के विरुद्ध थे।

निष्कर्ष — इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि रूसो केवल स्वप्न द्रष्टा न था वरन् पूर्ण रूप से व्यावहारिक भी था। पूर्ण ज्ञानी न होते हुए भी उसने शिक्षा, राजनीति, समाज आदि के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला है। रूसो सहज ज्ञानवादी है उसके धर्म का आधार (आत्मा की आवाज) तथा प्रकृति है। ~~रूसो~~ रूसो की विचारधारा प्रकृतिवादी है। रूसो का मानना था कि मनुष्य की प्राकृतिक प्रकृति श्रेष्ठतम है इसलिए हमें बुद्धि के स्थान पर भावना का ही विकास करना चाहिए। इन्होंने नारा दिया —

"प्रकृति की ओर लौटो"

रूसो के अपने इन्हीं विचारों के आधार पर इनके दर्शन की तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा देखी जा सकती है।